e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

'समर शेष है' उपन्यास में आदिवासी नारी समस्या

लक्षेश्वरी कुर्रे
सहायक प्राध्यापक विभाग–हिन्दी,
शा. महाविद्यालय, तमनार, जिला,
रायगढ (छ.ग.)
Orcid: https://orcid.org/0000-0001-6486-7349

सारांश

आदिवासी समुदायों को सदियों से ही मुख्यधारा और साहित्य के क्षेत्र से बाहर ही रखा गया है। इस समाज को आदिकाल से पिछड़ा हुआ मानकर उपेक्षित और तिरस्कृत किया जाता रहा है और वर्तमान समय में भी उन्हें उपेक्षित ही किया जा रहा है। जिसकी वजह से इनकी परम्परा, भारतीय संस्कृति, कला, प्रकृति प्रेम, सामूहिकता और वन्य जीव एवं वन्य सम्पदाओं पर खतरा मण्डराते रहा है। झारखण्डी संस्कृति से जुडे आदिवासी समाज आज अपने ही झारखण्ड में अस्तित्व, अस्मिता, पहचान और अपनी हिस्सेदारी खाने के लिए बाध्य और मजबूर हो रहा है। जनसंख्या वृद्धि के कारण बाहरी व्यक्ति भी जनजातियों के क्षेत्रों में बसने लगे और अपनी पूंजी के दम पर ऋण की सुविधा आदिवासी समाज को देने लगे। पहले आर्थिक सुविधा दिये फिर उसके आड़ में धीरे–धीरे सामाजिक और सांस्कृतिक शोषण का शिकंजा कसने लगे। दिकुंओ, पूंजीपतियों और अंग्रेज सरकार आपस में मिलकर अपनी स्वाथपूर्ति हेतु आदिवासी समाज पर विभिन्न प्रकार से शोषण करना प्रारंभ कर दिये। ये शोषण आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि आदिवासी समाज की स्वच्छंद जीवनयापन का भी नाजायज फायदा उठाते हुए आदिवासी स्त्रियों का अस्तित्व और अस्मिता के साथ भी खिलवाड़ करना प्रारंभ कर दिये। हद तो यह है कि वैश्विकरण के इस दौर में बाजार की मांग पर आदिवासियों की नुमाइश तक हो रही है। अण्डमान और निकोबार द्वीप समूहों में जारवा और आंजे समुदाय को चिडियाघरों में बंद वन्य जीवों की तरह पर्यटन और विस्मय की वस्तु बना दिया गया है। विकास और बाजारवाद का अद्भुत समन्वय देखने को मिल रहा है। जब–जब दिकुओं महाजन, पूंजीपति और अंग्रेजों ने आदिवासी जीवन में हस्तक्षेप किया तब–तब आदिवासी समाज अपनी सामाजिक सांस्कृतिक अस्तित्व अस्मिता की रक्षा और अपनी पहचान स्थापित करने के लिए आपस में संगठित होकर आंदोलन करने लगे। जिसे अंग्रेजी सरकार दबाते रहे, फिर भी शोषण और अत्याचार के साथ झारखण्डी आदिवासी ने कभी समझौता नहीं किया।

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

आदिवासियों के जीवन और संस्कृतियों पर परंपरागत आंचलिक दृष्टि से वृंदावन लाल वर्मा, रांगेय राघव, हरिऔध, योगेन्द्रनाथ सिंहा, राजेन्द्र अवस्थी, मैत्रेयी पुष्पा, रमणिका गुप्ता, निर्मला पुतुल, हिमांश जोशी, संजीव, अखिलेश्वर झा, शैलेन्द्र सागर, प्रभाष जोशी, मोहनदास नैमिशराय, भगवान दास आदि साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में आदिवासी शोषण का दमन के कारण अपने अस्तित्व अस्मिता और पहचान के संकटाग्रस्थ स्थितियों से जूझते हुए आदिवासी समुदायों की आवाज को बड़ी सिद्दत के साथ उठाया और उनसे जुडे सृजनात्मक साहित्य को प्रोत्साहित किया। इसी परम्परा को आगे बढाते हुए लेखक विनोद कुमार ने अपने उपन्यास समर शेष है में झारखण्डी आदिवासी समाज की आधुनिक समस्या और उनका संघर्ष कई रूपों में जैसे—महाजनी शोषण, स्त्री समस्या, विस्थापन के खिलाफ विद्रोह, प्रशासनिक उपेक्षा, औद्योगिकरण, आदिवासियों के शोषण मुक्त प्रांत की मांग और उपनिवेशवादी राजनीति के विद्रोह, संघर्ष करते हुए नजर आते हैं। आदिवासी समाज की स्त्री हो या पुरूष, सबकी अलग—अलग समस्याएं हैं, किन्तु स्त्री समस्या भूतकाल में जैसी थी, वैसी इक्कीसवीं सदी में भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। यह शोध आलेख झारखण्डी आदिवासी स्त्री शोषण और समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया जा रहा है।

शब्द कुंजीः विनोद कुमार, समर शेष है, आदिवासी स्त्री शोषण।

प्रस्तावना

भारत में निवासरत जातियों और समुदायों में आदिवासी जातियों का विशेष महत्व है। ये चिरकाल से जंगलों में निवास करते आ रहे है। इनके रीति—रिवाज, धार्मिक क्रियाएँ सामाजिक चुनाव और साहित्य ये सभी वनों की पृष्ठीभूमि में ही पल्लवित और पुष्पित हुई है। इन जनजातियों की जीवनयापन की एक विशेष शैली है जो अन्य समुदाय से अलग और विशेष महत्व रखता है। वन आदिवासियों के जीवन का अभिन्न हिस्सा है और वन सम्पदाओं इन समुदायों के लिए शरीर में रक्त का कार्य करती है। लेकिन आदिवासियों का सदियों से शोषण होता आ रहा है क्योंकि आदिवासियों को कभी भी मुख्यधारा में इन्सान का दर्जा नहीं दिया गया। इस कारण आदिवासियों की आधुनिक समस्या और उनका संद्यर्ष चिरकाल से निरंतर चली आ रही है जैसे—महाजनी शोषण, विस्थापन के खिलाफ विद्रोह, प्रशासनिक उपेक्षा औधौगिकरण के क्षेत्र में शोषण, मुक्त अलग प्रांत की मांग, उपनिवेशवादी राजनीति के विद्रोह और स्त्री शोषण के खिलाफ विद्रोह......आदि संद्यर्ष करते हुए आदिवासी समुदाय नजर आते हैं। अपने देश में ही कई बड़े आदिवासी विद्रोह हुए जिनसे इतिहास के पन्ने भरे पड़े है। अपने देश में देखा जाये तो अंग्रेजों ने आदिवासियों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यावहार किया वेरियर एलविन लिखती हैं—'' ....अब उन्हें उत्पीड़न और शोषण से गुजरना पड़ रहा था, क्योंकि जल्दी ही व्यापारी और दारु के ठेकेदार वहाँ आ गए और तब तक उनकी सादगी और अज्ञान का फायदा उठाते रहे, उन्हें उकसाते और ठगते रहे, जब

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

तक थोड़ा–थोड़ा करके उनके विशाल खेत सिकुड़ नहीं गए और उस गरीबी के मुॅह में नहीं गिर गए जहॉ वे आज भी जी रहे हैं।''[1] आदिवासियों को जब–जब शोषित और उत्पिड़ित किया गया तब–तब उन्होंने संघर्ष किया लेकिन झारखण्डी आदिवासियों ने कभी भी अत्याचार और शोषण के साथ समझौता नहीं किया।

विनोद कुमार जी ने उपन्यास 'समर शेष है' में आदिवासी स्त्रियों की समस्याओं को उठाया ही नहीं बल्कि ध्वनित भी किया है। उपन्यास के प्रारम्भ से ही महाजनी शोषण के विरुद्ध संघर्ष करते हुए आदिवासी समाज की शिबू सोरेन के पिता सोबरन मांझी से होता है जो गॉव नेमरा की एक आदिवासी महिला रुपा अपने पति की मृत्यु के मौके पर हेडबरगा के महाजन विष्टू साव से दो मन धान कर्ज पर लेती है और दो वर्ष में भी लौटा नहीं पाती है तब विष्टू साव अपने लठैतों के साथ अचानक आकर रुपा का सारा धन बैलगाड़ी में रखकर ले जाना चाहता है। रुपा के विरोध करने पर उसका हाथ भी पकड़ लेता है विष्टू महाजन के इस हरकत को सोबरन गुरुजी बर्दाशत नहीं करते है और ललकारते हुए अपनी चप्पल से उसकी पीटाई करते है। वर्षो से रौब बनाए रखने वाला विष्टू साव की अपनी सांमती संस्कारों को ठेस पहुॅचाती है–'' विष्टू साव का माथा जमीन से टकराने की वजह से सामने छील गया था। उसकी पीठ पर भी जलन हो रही थी, लेकिन उससे ज्यादा जलन अपमान की थी। उसकी ऑखों के सामने अंधेरा छाने लगा था और सर्वांग सुलग रहा है। बड़ी मुश्किल से वह उठा अपनी धोती सम्भाली और एक बार जलती निगाहों से गुरुजी को देखता हुआ। आंगन से निकल गया।''[2] महाजनी शोषण के विरुद्ध संघर्ष की शुरुवात यही से होती है। लेकिन इनका इस शोषण के विरुद्ध संघर्ष का एक लम्बी परम्परा रही है इस बात का एहसास लेखक ने बाबा क्रांतिकारी पात्र सोबरन गुरुजी को बताते हुए कि– ''इन लागों ने कैसा अत्याचार और अनाचार किए, इसकी आज तुम कल्पना नहीं कर सकते। जमीन हमारी लेकिन वे हमसे मनमाना कर मॉगते, हमसे बेगार करवाते और विरोध करने पर मारते–पीटते। हमारी बहू–बेटियों का उठा ले जाना रोज की बात थी। यहॉ तक की हम अपने खेत में खड़े पेड़ का फूल भी उनकी इजाजत के बगैर नहीं तोड़ सकते थे। अंग्रेजों के आने के बाद कई तरह के कानून बने, कोर्ट–कचहरी खुली। लेकिन उनका कानून, उनकी कोर्ट–कचहरी, उनके करिन्दे जमींदारों की ही मदद करते।''[3] आदिवासी समुदायों का महाजनों और जमींदारों ने अंग्रेजो के साथ मिलकर किस तरह अत्याचार और अनाचार किये इस बारे में बाबा अपने व्यक्तिगत जीवन की घटनों के बारे में बताते हुए महाजन–जमींदार अपने लटैत बल के माध्यम से उनका सब कुछ छीन लिया और उनकी मॉ, चाची, और बुआओं के साथ बलात्कार किये। बाबा कहते है कि आदिवासियों ने अपनी समस्याओं के खिलाफ स्वयं एकजूट होकर संघर्ष करते हुए अपनी आस्तित्व और अस्मिता की रक्षा के लिए कुल्हाड़ी उठाया – ''इनसे बचने का एक ही तरीका है। कुल्हाड़ी उठाओ और उनकी बोटी–बोटी काट डालो।''[4] क्योंकि जमींदार महाजन शोषण करने से कभी बाज नहीं आयेगे। इक्कीसवीं सदी के आते–आते पूरा वैश्विक

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

परिदृश्य बदल चुका है लेकिन नारी शोषण में किसी तरह का कोई परिवर्तन दिखाई नहीं देता है बल्कि नारी शोषण में तेजी ही आयी है तभी तो विष्टू साव अपनी पिटाई से बौखलाकर रुपा और सोरबन गुरुजी से बदला लेने के लिए सालखन और कार्तिक को शराब पीलाकर रुपा को एक फर्जी बाबा के द्वारा डायन घोषित करवा के इनके हाथों उसकी हत्या करवा देता है। तब सोरबन गुरुजी विष्टू साव के खिलाफ पूलिस में गवाही देते हैं– ''इन दोनों को बरगलाया गया है कि रुपा डायन बच चुकी है और वह इन दोनों को भी मार कर खा जायेगी। ''.... आपको उन लोगों के खिलाफ भी कारवाई करनी चाहिए, जिन लोगों ने इन दोनों को रुपा की हत्या के लिए प्ररित किया।''[5] पर पुलिस बिष्टू साव का कुछ नही बिगाड़ती है जिसके कारण आदिवासी समाज का भरोसा पुलिस और कोर्ट–कचहरी से उठ जाता है।

आदिवासी औरतों का सदियों से महाजनों जमींदारों, ठेकेदारों अंग्रजो ने जमकर शोषण किया क्योंकि ये सांमती विचारधारों वाले आदिवासी समाज के खुलेपन का हमेशा गलत इस्तेमाल किया। और महिलाओं को घृणित कार्य करने के लिए मजबूर किया गया कभी प्रलोभन देकर तो कभी धमकी देकर बाबा कहते हैं कि उन्होंने बचपन से ऐसा देखा है– ''अपने गॉव–घर की औरतों को उनके द्वारा घसीटकर ले जाते कई बार देखा था और उनकी चींखे मेरे कानों में गुंजती रहती।''[6] सांमती महाजन आदिवासियों की जमीन जल और जंगल छिनने के बावजूद भी उन पर शोषण करना नहीं छोड़े और अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु बेवस बेसहारा असहाय आदिवासी स्त्रियों को अपनी हवस का शिकार भी बनाते आ रहे है। स्त्री शोषण के खिलाफ आदिवासी समाज आन्दोलन करते है उनका यह संद्यर्ष सिर्फ शारीरिक शोषण के विरुद्ध ही नहीं है बल्कि अपनी जटिल सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक स्थिति के विरुद्ध भी किया जा रहा है। कोलियारियों में यूनियन नेताओं के गुण्डे आदिवासी महिला मजदूरों के साथ छेड़छाड़ करते है– ''कोलियरी के तथाकथित मजदूर नेताओं के पाले पहलवान रात में गॉव (अर्थात मजदूर बस्ती) में घुस जाते है, मजदूर कॉलोनियों में घुसकर कोहराम मचाते हैं। औरतों को जबरन कोयला बोझाई के लिए ले जाते है। कोयला की बोझाई की आड़ में उनके साथ छेड़छाड़ करते हैं।''[7] स्त्री किसी भी क्षेत्र में आज सुरक्षित नहीं है प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों को पुरुषवादी सामंती विचारधारों के शोषण का शिकार होना पड़ रहा है। झारखण्डी आदिवासी समुदायों द्वारा स्त्री शोषण के खिलाफ किया जाने वाला आन्दोलन सिर्फ गॉवों तक सीमित नहीं है बल्कि शहरों तक पहुंचता है अपनी अस्मिता की सुरक्षा हेतु आदिवासी स्त्रियॉ निरंतर संघर्ष से जूझ रही है कहीं व्यक्तिगत स्तर पर तो कहीं सामूहिक स्तर पर या संगठन के माध्यम से तो कहीं अपनी नियती समझकर सहन करने के लिए मजबूर हो रही हैं। ''सिमला–बहाल कोलियारी में होली के दिन नाच गान के अवसर पर एक गुण्डा जीरन की छाती पकड़ लेता है इस पर मंजीत ने एक जलती लकड़ी का कुंदा उस गुण्डे के सिर पर मार दिया। बाकी लोगों ने मिलकर उन गुण्डों की पिटाई की। इसके बाद अलगी होली

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

पर तो दस दिन पूर्व ही धानसिंह और उनके साथियों ने छोटा नागपुर प्लेटो प्रजा–परिषद की तरफ से परचा निकाल दिया कि आदिवासी समाज होली नहीं मनाता है। आदिवासी औरतें अबीर को मॉग का सिन्दूर मानती हैं। इसलिए इनके साथ होली खेलने की कोशिश न की जाये। अन्यथा भारी खून–खराबा होगा। फिर भी कुछ गुण्डों के नेता बस्ती में आ जाते हैं। और आदिवासी मजदूर उनकी जबरदस्त पिटाई करते हैं।''[8] इस तरह से आदिवासी समाज अपनी समुदाय की स्त्रियों की सुरक्षा के लिए एक जूट होकर विद्रोह करते है क्योंकि प्रशासन किसी भी तरह से उनकी रक्षा नहीं करती है बल्कि आदिवासी समाज को प्रशासनिक आधिकारियों, कोर्ट–कचहरी और पुलिस की ज्यादती का भी समान करना पड़ता है। और विस्थापन की वहज से भी आदिवासी स्त्रियों की स्थिति दिन–प्रतिदिन बद् से बद्तर होती जा रही है। लेकिन पुलिस और प्रशासन किसी भी स्थिति में आदिवासी समुदायों की रक्षा के लिए आगे नहीं आती है। तभी तो सोनमणी अपने पति की हत्या हो जाने के कारण बार–बार न्याय की मॉग करते हुए कोर्ट–कचहरी जाती है और न्याय नहीं मिलने पर तंग आकर व्यवस्था के तरिकों को चुनौती देती हूई सीधे–सीधे जज को ललकारी है। नासिरा शर्मा ने लिखा है– ''यह सदी वास्तव में महिला सदी है जिसमें औरत हर क्षेत्र में न केवल मर्द के संग कदम से कदम मिलाकर चली है बल्कि कुछ क्षेत्रों में मर्द से आगे निकलकर इस तर्क को साबित कर दिया है कि मर्द और औरत के दिमाग में कोई फर्क नहीं होता है।''[9] आदिवासी स्त्रियॉ घर बाहर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती है उसके बावजूद भी उसे अपने ही समुदायों में शोषण का शिकार होना पड़ता है और उनको दोयम दर्जा का ही माना जाता है रमणिका गुप्ता लिखती हैं– ''ऐसे तो आदिवासी नारियों की स्वतंत्रता एवं स्वच्छंदता का मिथक और भ्रम का खूब प्रचार किया जाता रहा है, लेकिन समाज के भीतर ऐसे कड़े नियम और बंटवारे है जो स्त्री को पुरुष से कमतर महसूस करने के लिए गढ़े गये हैं। एक बात तो माननी होगी कि भारतीय संस्कृति के बिल्कुल विपरित आदिवासी स्त्री को अपना वर चुनने की इजाजत है, इसके लिए वह न तो दंण्डित होती है और न ही दोषी करार दी जाती है।''[10] आदिवासी स्त्रियों की स्थिति दैयनीय होती जा रही है और अपनी अस्तित्व अस्मिता की रक्षा के लिए सदैव संघर्ष रत बने हुए।

वर्तमान समय में भी झारखण्डी आदिवासी स्त्रियों की स्थिति दैयनीय बनी हुई है। महिलाओं के लिए उदार मानी जाने वाली आदिवासी समाज और संस्कृति बाहर से जैसे दिखाई देती है अन्दर से वैसा कुछ नहीं है– ''महिलाओं के लिए सामाजिक रुप से ज्यादा उदार माना जाने वाला झारखण्ड, भले ही इनके लिए कई मायनों में अन्य राज्यों से बेहतर हो पर महिलाओं के लिए तो यहॉ आज भी तमाम सवालों की बेड़ियॉ पहले जैसी ही सख्त और कसावट लिए हैं, इसे यहॉ साफ महसूस किया जा सकता है।''[11] लेखक ने स्त्री शोषण के खिलाफ आदिवासियों के संघर्ष को एक आन्दोलन के रुप में चित्रित किया है जिसमें स्त्रियॉ अपनी अस्तित्व और अस्मिता

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

की रक्षा और अपनी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए संघर्ष सिर्फ शारीरिक मानसिक शोषण के खिलाफ ही नहीं बल्कि अपनी सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति के विरुद्ध भी किया जाता है। स्त्री शोषण के खिलाफ सबसे बड़ा धानकटिया आन्दोलन किया जाता है जिसमें शिबू आन्दोलन को जारी रखने के उद्देश्य से पुलिस के संग लुका–छुपी का खेल खेलता रहता है और धानकटिया आन्दोलन को एक उत्सव का रुप दिया जाता है लेखक विनोद कुमार लिखते है कि– ''युवकों और बुढ़ओं ने तीर से भरा तरकस पीठ पर बांध रखा है। धनुष की डोरी तानकर चढ़ा दी गई है। कइयों के हाथ में फरसा और कुल्हाड़ी है। औरतों के हाथ में हसुली। कुछ की पीठ पर बच्चा बंधा है। साथ – साथ भौकते हुए दौड़ रहे हैं गॉव के शिकारी कुत्ते।''[12] अनगिनत आदिवासी युवतियॉ एक साथ खेत में उतर जाती है और इस ऐतिहासिक धानकटिया आन्दोलन को उत्सव का रुप देकर अपने काम को अंजाम तक पहुंचाती हैं। इस धानकटिया आन्दोलन को बहुत नजदीक से देखने वाले डॉ. वीरभरत तलवार लिखते है– ''खेत में आदिवासी औरतें घुस जाती और धान काटती, मर्द तीर – धनुष लेकर पहरा देते और बाकी आदिवासी अपने नगाड़े और तुरही बजाते।''[13] आदिवासी समाज स्त्रियों पर हो रहे शोषण के विरुद्ध आन्दोलन करते है। विष्टू साव जैसे जमींदार महाजन, पुलिस और कोर्ट–कचहरी कुछ नहीं कर पाते और उनका आक्रोश देखकर भाग जाते हैं। जिससे धानकटिया आन्दोलन तीव्र हो जाता है और महाजनों द्वारा कब्जा कर लिया गया आदिवासियों के जमीन से ये फसल काटना शुरु कर देते हैं जिससे आन्दोलन व्यापक रुप ले लेता है और इस तरह से आदिवासी समाज अपने शोषण के खिलाफ आन्दोलन रुपी मशाल मजबूती से थाम लेते हैं। ये आन्दोलन किसी व्यक्ति विशेष का नहीं था बल्कि ये आन्दोलन समस्त आदिवासी समुदायों का महाजन–जमींदारों के खिलाफ था। झारखण्डी आदिवासी समाज के इस ऐतिहासिक आन्दोलन के बारे में उपन्यासकार विनोद कुमार अपनी पुस्तक 'टुण्ड्री की ट्रेजिडी' में लिखे हैं– ''उस संघर्ष में निहित रचना के सूत्र पिछड़े और अप्रांसगिक माने जाने वाली आदिवासी संस्कृति की सामूहिकता सहभागिता और समता पर आधारित जीवन–दृष्टि के पुनजीवित हो सकने और नये समाज की संभावना को उजागर कर गए।''[14]

निष्कर्ष

लेखक विनोद कुमार जी ने अपनी रचना समर शेष हैं में झारखण्डी आदिवासी स्त्रियों का ज्वलन्त समस्याओं पर लेखनी चलायी है वे किसी तरह से ये झारखण्डी आदिवासी स्त्रियॉ अपनी अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा के लिए और अपनी स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए संगठित होकर महाजनी शोषण के खिलाफ विद्रोह करती हैं। वर्तमान समय में भी इनकी स्थिति निम्नतर है क्योंकि प्रशासनिक स्तर पर महिलाओं के उत्थान के लिए कोई कार्य नहीं करता है। आदिवासी स्त्रियॉ कहती हैं–जो भी कुछ महिलाओं के पास है वो हमारे अपने समाज और संघर्ष की देन है, सरकार और नेताओं का इसमें कोई योगदान नहीं है।''[15] (पाणिनी आनंद, लेख – आज भी

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

भोगती हैं नारी होने का देश) आदिवासी स्त्रियों की विकास के लिए विकास योजनाओं की समुचित व्यवस्था सिर्फ कगजी रुप में दिखाई पड़ती है व्यवहारिक रुप में नहीं।

संदर्भ–ग्रन्थ–

1. दी ट्राइबल वर्ल्ड ऑफ बेरियर एलविन बंबई 1964 पृ.स.130।
2. विनोद कुमार, समर शेष है , नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान 1999, पृ.सं 96।
3. वही पृ.सं. 15।
4. वही पृ. सं. 13।
5. वही पृ. सं. 53।
6. वही पृ.सं. 275।
7. वही पृ. सं. 16।
8. नासिरा शर्मा , औरत के लिए औरत पृ. सं. 120।
9. रमणिका गुप्ता, कथादेश, अंक मई 2002 पृ.सं.39।
10. विनोद कुमार, समर शेष है , नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान 1999, पृ.सं 230।
11. वीर भरत तलवार, नक्सलवादी के दौर में पृ. सं 427।
12. विनोद कुमार टुन्ड्री की ट्रेजडी 2007, रॉची, देशज प्रकाशन पृ. सं. 30।

****